रहते हुए भी
ब्रने के लिए

ार के लिए
लिए उपयोगी
ग बन चुका
ध्यस्तता की
। 'विज्ञापन
. दृष्यश्राव्य
ी चीज या
ारधारा, पक्ष
सकी और
रता है।''४
ार वंछित
। में खाली
के कार्य
कार्य एक

पब्लिकेशन

ल रस्तोगी
५.
ल रस्तोगी
३५.
त्रिवेदी —
२०१५.
ाद — प्रा.

सोनटक्के.

39

राजभाषा हिंदी के मानक और व्यवहारिक रूपों में अंतर

डॉ. दिनेश श्रीवास
सहा. प्राध्यापक हिंदी,
शा. इ.वि.पी.जी. महाविद्यालय कोरबा, छत्तीसगढ़

प्रत्येक भाषा के विविध रूप होते हैं । यह विविध रूप उसके प्रसार या अलग–अलग रूपों और प्रयोगों के आधार पर हो सकते हैं। हिंदी भी इसका अपवाद नहीं है। हिंदी अपनी बोलियों के साथ एक निश्चित क्षेत्र में व्यवहृत होती थी, लेकिन इसके क्षेत्र में लगातार प्रसार होता रहा । हिंदी भाषा संपूर्ण भारत में व्यवहृत नहीं होती है, इसके बाद भी इसे राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। हिंदी के अलग–अलग रूप उसके क्षेत्र और प्रयोग के आधार पर ही निश्चित होते हैं । विविध रूप से तात्पर्य हिंदी भाषा के कई रूपों का पाया जाना है जैसे क्षेत्र के आधार पर हिंदी की अलग–अलग बोलियां उसके कई रूपों को उजागर करती है, उसी प्रकार प्रयोग के आधार पर कार्यालय की भाषा, माध्यम की भाषा आदि उसके कई रूप हो सकते हैं। यहां हम प्रयोग के आधार पर हिंदी के विविध रूपों का उल्लेख करेंगे।

भाषा प्रयोग के प्रकार— सामान्यतया भाषा का प्रयोग हम कई प्रकार से करते हैं जैसे मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा, राज्य स्तर की भाषा, राष्ट्रीय भाषा, विश्व भाषा, साहित्य की भाषा, विज्ञान तकनीकी की भाषा, ज्ञान की भाषा, धर्म संस्कृति की भाषा, संचार की भाषा, माध्यम की भाषा, संपर्क भाषा, कार्यालय की भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा भाषा, वित्त और वाणिज्य की भाषा, मशीनी भाषा आदि। हिंदी भाषा का प्रयोग इन सभी रूपों में हो रहा है।

कार्यालयीन भाषा — कार्यालयों में प्रयुक्त भाषा को